पाठ-14

याचक और दाता

आइए, सीखें : ● मानवीय नैतिक मूल्यों - ईमानदारी, सेवा-भाव को जीवन में उतारना। ● प्रत्यय एवम् उपसर्ग का ज्ञान। ● मुहावरों की जानकारी एवम् वाक्य-प्रयोग। ● अवतरण चिह्न का प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** इस कहानी में यह बताया गया है कि ममता का भाव बिना भेद-भाव किए, निस्वार्थ भाव से सेवा करने को उत्साहित करता है। दूसरी ओर पूँजीवादी, सामंतवादी शक्तियाँ मानवीय मूल्यों का पतन कर देती हैं। कहानी में एक वृद्धा फूल आदि बेचती है और एक बच्चे का पालन-पोषण भी करती है। यह बच्चा उसका नहीं है, फिर भी उसके लिए धन-संग्रह कर एक सेठ के यहाँ जमा करती है। आवश्यकता पड़ने पर वह सेठ धन लौटाने से मुकर जाता है लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह बच्चा उसका ही खोया हुआ पुत्र है, तब वह एकदम बदल जाता है।)*

वह प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे के पास जाकर खड़ी होती, दर्शन करने वालों को पुकारती, कहती-''ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ।'' बोली की मिठास दर्शनार्थियों को आकर्षित करती और लोग नेत्रहीन वृद्धा से महकते फूल लेते; उसकी झोली में पैसा डालते और आगे बढ़ जाते।

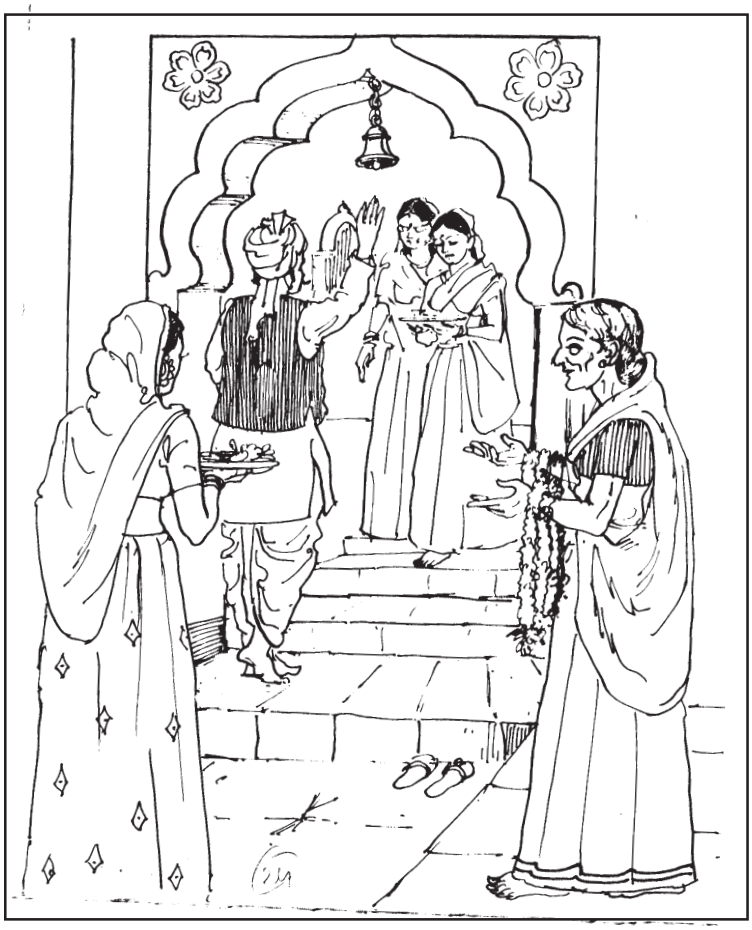

सुबह से शाम तक वह उसी तरह सबका जीवन महकाती और रात्रि को मन ही मन भगवान को प्रणाम कर लाठी टेकती, झोपड़ी की राह पकड़ती। झोपड़ी के समीप आते ही दस वर्षीय बालक उछलता-कूदता उससे लिपट जाता। वृद्धा उसे टटोलती, दुलारती और माथे को चूमकर जैसे पूरा प्यार उड़ेलने का

शिक्षण संकेत : ■ कहानी को हाव-भाव के साथ बच्चों के बीच सुनाएँ।

प्रयास करती।

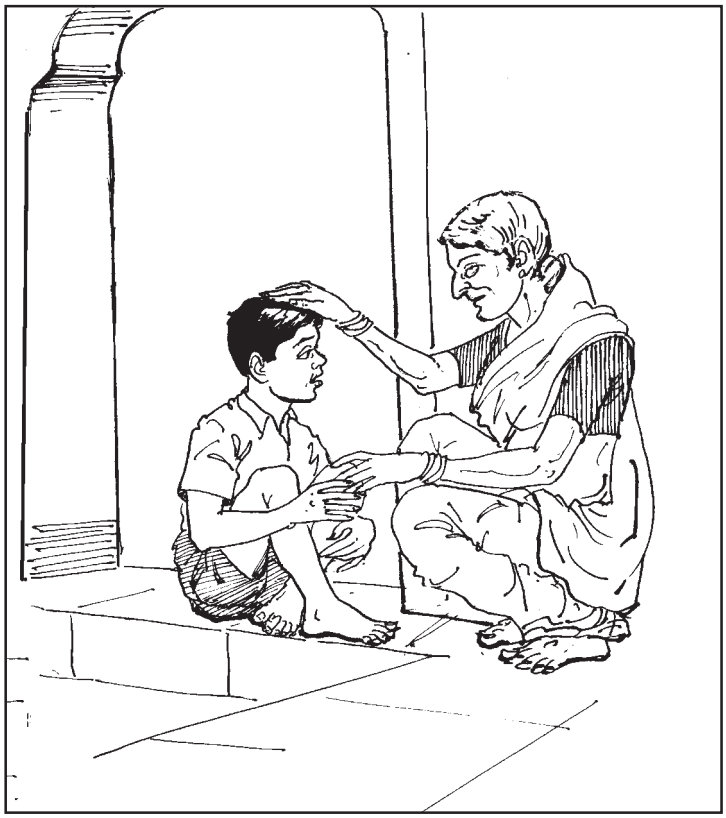

बच्चा कौन है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचित नहीं था। कुछ वर्ष पूर्व संध्या के समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था। असहाय और रोते बच्चे को वृद्धा ने अपनी गोद में बिठाया और उसे चुप कराने का प्रयास करने लगी। ममता का आँचल पाकर बच्चा सब कुछ भूल गया था। इस तरह वह वृद्धा के पास रहने लगा। वात्सल्य की तड़प ने वृद्धा की जिजीविषा बढ़ा दी। अब वह पहले से ज्यादा श्रम करती और शीघ्र लौटने की कोशिश करती। बच्चा माँ के स्नेह को पाकर प्रसन्न था।

वृद्धा ने अपनी झोपड़ी में एक हाँड़ी गाड़ रखी थी। दिन भर की मेहनत से वह जो कमाती, उसमें से बचत करके डालती जाती। वह बच्चे के सुखद भविष्य को बुन रही थी। बच्चे को अच्छा खिलाना, पहनाना और प्रसन्न देखने में ही वह प्रसन्न रहती थी। उसे लगता जैसे उसकी मंजिल मिल गई हो। दिन भर फूल बेचती और घर आकर बच्चे को हृदय से लगा लेती। मंदिर के पुजारी की दया उस वृद्धा पर थी। वह उसे मंदिर की फुलवारी से फूल तोड़ने देता और उसके ममता पर गर्व महसूस करता। वृद्धा भी फुलवारी को पानी से सींचकर सेवा करती।

उसी नगर में सेठ बनारसीदास रहते थे। देवभक्त और धर्मात्मा के रूप में उनकी अपनी पहचान थी। उनकी कोठी पर हर समय जरूरतमंदों की भीड़ लगी रहती । कुछ कर्ज लेने आते तो कुछ अमानत रखने। क्षेत्र के सभी मज़दूर, जो कुछ बचा पाते इन्हीं सेठ जी के यहाँ जमा कराते थे, पर वृद्धा न जाने क्यों सेठ जी के यहाँ धन जमा कराने में हिचकिचाती थी। हाँड़ी में अधिक धन हो जाने के कारण तथा चोरी हो जाने की आशंका से एक दिन संध्या को वृद्धा ने हाँडी उखाड़ी और छिपाकर सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची।

सेठ जी ने बहीखाते के पृष्ठ उलटते हुए पूछा ''क्या है बुढ़िया?'' वृद्धा ने हाँड़ी सेठ जी की ओर सरकाते हुए, सहमे स्वर में कहा, ''सेठ जी इसे जमा कर लें। मैं इसे कहाँ रखती फिरूँगी?

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी को सुनाते समय छोटे-छोटे प्रश्न कर कहानी को आगे बढ़ाएँ ।

इसमें क्या है? सेठ जी ने हाँड़ी की ओर देखते हुए कहा । वृद्धा ने उत्तर दिया मेहनत-मजदूरी करके कुछ पैसे जमा किए हैं। चोरी न हो जाएँ इस डर से इन्हें आपके पास रखने आई। जब जरूरत होगी, तब ले जाऊँगी।

सेठजी ने मुनीम की ओर ऐनक में से देखते हुए कहा, –''इसे बहीखाते में इसके नाम से जमा कर लो।'' वृद्धा चैन की साँस लेती हुई अपनी झोपड़ी में लौट आई ।

दो वर्ष सुख से बीते। एक दिन ज्वर ने लड़के को आ दबाया । वृद्धा माँ ने दवा-दारू की, वैद्य को दिखाया, पर सारे प्रयत्न जैसे व्यर्थ हो गए थे। उसका साहस टूटने लगा। वह उसे ठीक करने के उपायों पर विचार करने लगी, तभी अचानक शहर के बड़े डॉक्टर का उसे ध्यान आया। इलाज के लिए पैसे का ध्यान आते ही वह सेठ बनारसीदास के यहाँ जा पहुँची। सेठ जी आसन पर टिके बैठे थे ।

वृद्धा ने आदर प्रकट करते हुए विनम्र भाव से कहा, ''मेरा बच्चा बहुत बीमार है। मेरी जमा हाँड़ी से मुझे कुछ रुपये मिल जाएँ तो मैं डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज करा लूँ।'' ''कैसी हाँड़ी ? कैसे रुपये? मेरे पास तो तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं हैं।'' सेठ जी ने कठोर स्वर में, झल्लाते हुए कहा। वृद्धा ने कहा ''सेठ जी अभी दो वर्ष पहले ही तो मैंने हाँड़ी में जमा-पूँजी आपके यहाँ जमा की थी।'' यह कहकर मुनीम जी की ओर सहानुभूति की अपेक्षा की दृष्टि से देखने लगी।

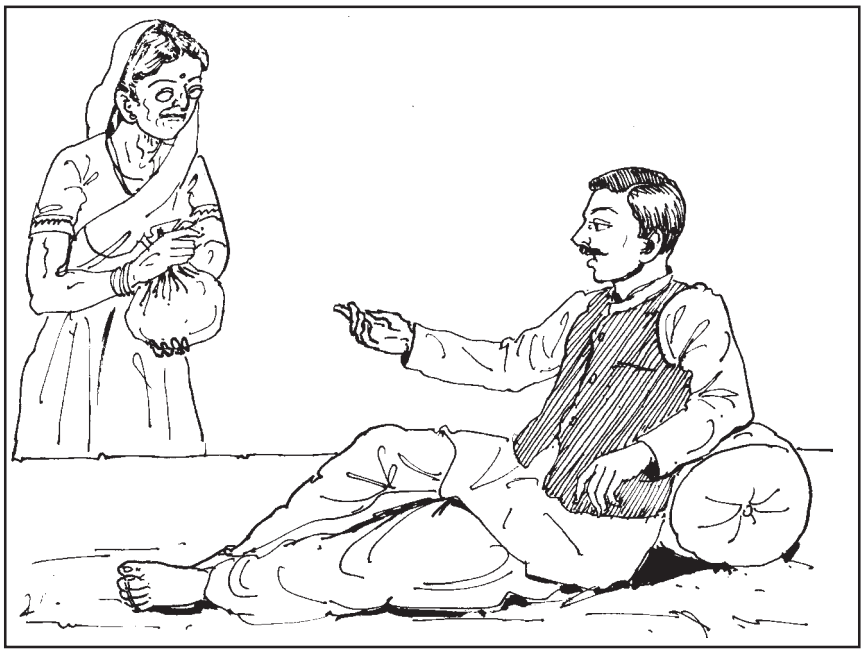

मुनीम जी ने सेठ जी की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखने के बाद वृद्धा से कहा, ''नहीं तेरे नाम तो कुछ भी जमा नहीं है। वृद्धा वहीं जमीन पर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी, रो-रोकर वह सेठ जी से दया करने की गुहार लगाती रही।''सेठ जी मेरा बच्चा ठीक हो जाएगा, मैं आपके जीवन भर गुण गाऊँगी?''

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी के आधार पर पात्र चयन कर बच्चों से संबंधित संवाद बोलने का अभ्यास करवाएँ। ■ कहानी में आए मुहावरों का अर्थ बतलाते चलें तथा उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग करवाने की गतिविधि करवाएँ।

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठ जी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया, ''जाती है या नौकर को बुलाऊँ?''

वृद्धा लाठी टेककर खड़ी हो गई। जाते-जाते सेठ जी की ओर मुँह करते हुए उसने कहा, 'अच्छा! भगवान तुम्हें बहुत दे।'

बच्चे की हालत दिनों-दिन बिगड़ती गई। प्राणों के लाले पड़ते देख वृद्धा माँ हताश हो उठी। रह-रहकर उसे सेठ पर क्रोध आ रहा था। वह करे तो क्या करे? अचानक वह कुछ सोचकर उठी और बच्चे को गोद में उठाकर सेठ जी के घर की ओर चल पड़ी। बच्चे का शरीर ज्वर से और उसका कलेजा क्रोध से जल रहा था । बच्चे को लेकर वह सेठ जी के यहाँ पहुँची और धरना देकर बैठ गई एक नौकर आया और वृद्धा को देखकर सेठ जी को इसकी सूचना दी। सूचना पाते ही सेठ जी ने उसे वहाँ से भगा देने का आदेश दिया।

नौकर ने बहुत कोशिश की पर वह टस-से-मस न हुई। थोड़ी देर बाद सेठ जी स्वयं आए। उसे देखकर उन्हें बहुत गुस्सा आया, पर बच्चे को देखकर वे हतप्रभ रह गए। बच्चे की सूरत उनके खोए बालक मोहन से मिल रही थी।

सात वर्ष पूर्व उनका बेटा मेले में खो गया था। बालक की जाँघ पर लाल रंग का चिह्न पहचानकर सेठ जी एकाएक चिल्ला उठे, ''यह बच्चा तो अपना मोहन ही है।'' इसके साथ ही तुरन्त वृद्धा से बालक मोहन को छीनकर सेठ जी ने अपने कलेजे से लगा लिया। बालक का शरीर ज्वर से तप रहा था। हालत को गंभीर समझ सेठ जी ने तुंरत नौकर से कहा ''जाओ, तुरन्त डॉक्टर को लेकर आओ। वे बालक को लेकर अंदर चले गए।

बाहर वृद्धा चिल्ला रही थी, ''मेरे बच्चे को मुझे वापिस कर दो, वह मेरे दिल का टुकड़ा है। उसे मत छीनो।''

सेठ जी अपना अधिकार जताते हुए बोले ''यह बच्चा मेरा है। इसे कुछ नहीं होने दूँगा। इसे किसी भी कीमत पर बचाऊँगा।''

वृद्धा ने जोर-से ठहाका लगाया,'' अब यह तुम्हारा बच्चा है? इसलिए इसे प्राण देकर भी बचाओगे। दूसरे के बच्चे की जान जान नहीं होती। यह कहाँ की मानवता है ?

सेठ जी की दशा अजीब थी। वे जैसे निरुत्तर हो गए थे । उनके अंदर का अहंकार धू-धू करके जल रहा था। वृद्धा कुछ देर बाद अपनी झोपड़ी की ओर चल पड़ी।

डॉक्टर ने आकर मोहन को दवाएँ दीं। दवाओं ने अपना प्रभाव दिखाया। होश आने पर उसने आँखें खोलीं और बोला, ''माँ''। अपने आसपास माँ को न पाकर वह रोने लगा। उसकी हालत फिर बिगड़ने लगी। ज्वर बढ़ रहा था और वह माँ की रट लगाए जा रहा था। डॉक्टर परेशान थे। सेठ जी के हाथ-पाँव फूलने लगे। चारों ओर अँधेरा नज़र आ रहा था।

सहसा सेठ जी का ध्यान उस वृद्धा की ओर गया जो थोड़ी ही देर पूर्व अपने बालक की पुकार करते-करते वापिस चली गई थी। सेठ जी शीघ्र अपनी कार से झोपड़ी तक पहुँचे। बिना झिझके वे झोपड़ी के अंदर गए। वृद्धा टाट पर निस्तब्ध लेटी हुई आँसू बहा रही थी। सेठ जी पहले सहमे, कि किस मुँह से इससे बात करें? पर बालक की गंभीर दशा याद आते ही उन्होंने झुककर उसे हिलाया।

वृद्धा ज्वर से तप रही थी। सेठ जी ने प्रार्थना भरे शब्दों में कहा-''तेरा बच्चा मर रहा है। वह बार-बार माँ ही माँ पुकार रहा है। अब तू ही चलकर उसके प्राण बचा सकती है।''

आज तक सेठजी ने किसी के सामने सिर न झुकाया था, किन्तु वक्त ने वृद्धा के सामने उन्हें याचक बना दिया। सेठ जी वृद्धा के पाँवों में गिरकर बच्चे की जान बचाने की याचना करने लगे। वे बोले-''ममता की लाज रख लो।'' माँ का ममत्व जाग उठा। वह बीता हुआ सब भूल गई और सेठ जी के साथ चल पड़ी। घर पहुँचते ही वृद्धा ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। हाथ पहचानते ही मोहन ने तुरन्त आँखे खोल दीं। माँ तुम आ गईं। वृद्धा ने कहा , ''हाँ बेटा, तुम्हे छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ ?'' उसने मोहन का सिर अपनी गोद में रखकर थपथपाया और मोहन को नींद आ गई। कुछ दिन बाद मोहन बिल्कुल स्वस्थ हो गया। जो काम दवाइयों, डाक्टरों और हकीमों से न हो पाया, वह वृद्धा माँ की ममता ने पूरा कर दिया।

वृद्धा माँ जब वापिस लौटने लगी तो सेठ जी ने उससे मोहन के पास रुकने की बात कही, लेकिन वह न मानी। सेठ जी ने रुपयों की वह हाँड़ी क्षमा माँगते हुए उसे लौटाई तो उसने कहा, यह तो मैने मोहन के लिए इकट्ठा किए थे, उसी को दे देना। ''वृद्धा सेठ जी की धरोहर 'मोहन' को सेठ जी के यहाँ छोड़कर, लाठी टेकती हुई, झोपड़ी में लौट आई। उसके नेत्रों से आँसू बह रहे थे, पर आज इन आँसुओं में फूलों का मकरंद और ममता की गंध थी। वह आज सेठ बनारसीदास से महान हो गई थी। सेठ याचक था और वह दाता।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी 'भिखारिन' पर आधारित

लेखक परिचय : रवीन्द्रनाथ ठाकुर – 'याचक और दाता' कहानी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'भिखारिन' कहानी पर आधारित है। रवीन्द्रनाथ जी बंगला साहित्य के प्रख्यात साहित्यकारों में से एक हैं। आपने अनेक कहानी-संग्रह, नाटक, कविताएँ जो बंगला साहित्य की धरोहर हैं, लिखी हैं। हमारे राष्ट्रगान के रचयिता रवीन्द्रनाथ ठाकुर ही हैं। उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अभ्यास

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

याचक – ..... शंका – .....

धरोहर – ..... जिजीविषा – .....

वात्सल्य – ..... निस्तब्ध – .....

हतप्रभ – ..... सहानुभूति – .....

गुहार – .....

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

1. वृद्धा मंदिर के पास क्या काम करती थी ?
2. सेठ बनारसीदास के यहाँ किन लोगों की भी़ड लगी रहती थी ?
3. वृद्धा सेठ जी से क्या माँगने गई थी ?
4. सेठ जी ने अपने बच्चे की पहचान कैसे की ?
5. बच्चा फिर से बीमार क्यों पड़ गया ?

प्रश्न 3. उपयुक्त शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(जिजीविषा, ममत्व, निस्तब्ध, हतप्रभ, मकरंद)

1. वृद्धा ..... टाट पर लेटी हुई आँसू बहा रही थी।
2. असहाय बच्चे को देख माँ का ..... जाग उठा।
3. आँसुओं में फूलों का ..... और ममता की गंध थी।

4. सेठ जी बच्चे को देखकर ..... रह गए।

5. वात्सल्य की तड़प ने वृद्धा की ..... बढ़ा दी थी।

प्रश्न 4. खंड 'अ' में दिए गए शब्दों का खंड 'आ' में दिए गए शब्दों से एक विशेष संबंध है। इनकी सही जोड़ी बनाते हुए खंड 'इ' में लिखिए -

(अ)	**(आ)**	**(इ)**
फूल	दाता	.....
याचक	ममता	.....
माँ	फुलवारी	.....
मंदिर	मानवता	.....
मानव	पूजा	.....

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

1. वृद्धा को उसकी मंजिल किस तरह मिल गई थी ?
2. मोहन कौन था? वह वृद्धा के पास कैसे आया ?
3. मोहन ज्वर से कैसे मुक्त हुआ ?
4 ''सेठ याचक था और वह दाता।'' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
5 सेठ जी और वृद्धा के चरित्र में से किसका चरित्र आपको अच्छा लगा ? उसकी कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

भाषा-अध्ययन

यह भी जानिए : किसी के द्वारा कहे गए शब्दों को जब हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लाते है, तब ''.....'' चिह्न लगाते हैं। इसे अवतरण चिह्न कहते हैं, जैसे वृद्धा ने कहा ''ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ''।

प्रश्न 1. इस कहानी से ऐसे पाँच वाक्य लिखिए जहाँ अवतरण चिह्न का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

टस-से-मस न होना, हाथ-पाँव फूल जाना, चंगुल में दबाना, ताँता बाँधना, जान में जान आना।

प्रश्न 3. 'याचक' एवम् 'दाता' शब्दों के क्रिया रूप लिखकर संज्ञा और क्रिया रूपों के वाक्य बनाइए।

प्रश्न 4. 'दुखिया' शब्द के दु:ख शब्द में 'इया' प्रत्यय लगा है।

दुख + इया = दुखिया

इसी प्रकार 'इया' एवम् 'वाला' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए।

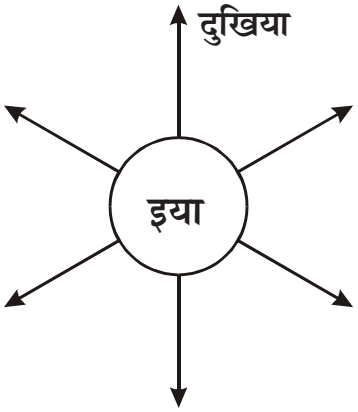

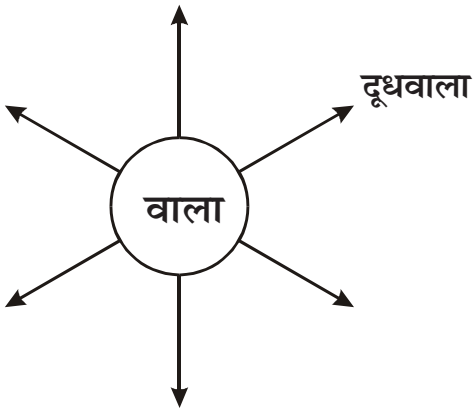

प्रश्न 5. इसी प्रकार 'अ' और 'वि' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइये-

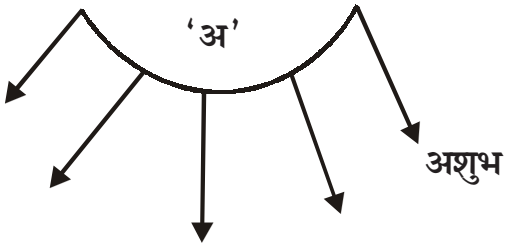

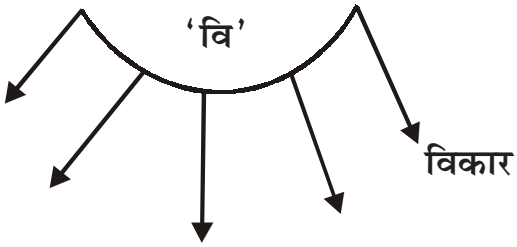

प्रश्न 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

एक दिन सिद्धार्थ बगीचे में बैठे हुए थे। अचानक उनके सामने तीर से बिधा हुआ एक घायल हंस आ गिरा। सिद्धार्थ ने उसे प्यार से उठाया, घाव पर मलहम लगाया। तभी उनका चचेरा भाई देवदत्त आ पहुँचा। उसने हंस माँगा। सिद्धार्थ ने हंस देने से मना कर दिया। विवाद राजा के दरबार तक जा पहुँचा। देवदत्त का कहना था कि उसने हंस का शिकार किया है, इसलिए हंस उसका है। सिद्धार्थ ने कहा कि मैंने हंस के प्राणों भी रक्षा की है, इसलिए हंस पर मेरा अधिकार है। राजा ने न्याय करते हुए कहा कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। अत: हंस पर सिद्धार्थ का अधिकार बनता है। राजा ने सिद्धार्थ को हंस दे दिया।

अ. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

आ. घायल हंस को किसने उठा लिया था ?

इ. देवदत्त हंस को क्यों माँग रहा था ?

ई. राजा ने क्या कहते हुए हंस सिद्धार्थ को सौप दिया ?

उ. राजा, दिन, तीर, प्यार के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए।

योग्यता विस्तार

1 यदि आपके दरवाजे पर कोई याचक आए, तो आप क्या करेंगे ? अपने विचार कक्षा में सुनाइए।

2 इस कहानी को पढ़कर आप क्या सोचते हैं ? संक्षिप्त में लिखिए।

3 'दानी कर्ण' जैसी दान देने वाली कहानियाँ पढ़िए और बालसभा में सुनाइए।